बारह भावना

अनित्य भावना

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सब को एक दिन, अपनी अपनी बार।।१।।

अशरण भावना

दल-बल देवी देवता, मात-पिता परिवार।
मरती विरियां जीव को, कोई न राखन हार।।२।।

संसार भावना

दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णा वश धनवान।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान।।३।।

एकत्व भावना

आप अकेला अवतरैं, मरे अकेला होय।
यूं कबहूँ इस जीव का, साथी सगा न कोय।।४।।

अन्यत्व भावना

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय।
घर संपति पर प्रगट ये, पर है परिजन लोय।।५।।

अशुचि भावना

दिपै चाम-चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगतमैं, अवर नहीं घिन गेह।।६।।

आस्त्रव भावना

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमे सदा।
कर्मचोर चहुँ ओर, सरवस लुटे सुध नही।।७।।

संबर भावना

सतगुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमे।
तब कुछ बनें उपाय, कर्मचोर आवत रुके।।८।।

निर्जरा भावना

ज्ञानदीप तप तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसै नहीं, पैठे पूरब चोर।।
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धरम निर्जरा सार।।९।।

लोक भावना

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादि तैं, भरमत हैं बिन ज्ञान।।१०।।

बोधि दुर्लभ भावना

धन कंचन राजसुख सबहि सुलभकर जान।
दुर्लभ हैं संसार में, एक जथारथ ज्ञान।।११।।

धर्म भावना

जांचे सुरतरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रैन।
बिना जाचै बिन चिंतये, धर्म सकल सुख देन।।१२।।